गाँधीवादी विचारधारा में महिला शिक्षा एवं समकालीन चुनौतियाँ

अभिषेक कुमार मिश्र
University Of Lucknow

सारांश - यह शोध पत्र ''गाँधीवादी विचारधारा में महिला शिक्षा और समकालीन चुनौतियाँ'' पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य महिला शिक्षा के महत्व, महात्मा गांधी के शैक्षिक दृष्टिकोण, और वर्तमान भारत में इसके सामने मौजूद प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण करना है। अध्ययन में यह जानकारी मिली कि हालाँकि महिला शिक्षा के क्षेत्र में कुछ प्रगति हुई है, लेकिन सामाजिक असमानता, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच का अंतर, डिजिटल विभाजन, आर्थिक चुनौतियाँ, और बाल विवाह जैसी समस्याएँ अभी भी बनी हुई हैं। महात्मा गांधी की 'नई तालीम' और मूल्य-आधारित शिक्षा का सिद्धांत इन समस्याओं को हल करने का एक मजबूत आधार प्रदान करता है। यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि महिला शिक्षा को सिर्फ साक्षरता तक सीमित नहीं करना चाहिए, बल्कि इसे आत्मनिर्भरता, नैतिक विकास और सामाजिक समानता से भी जोड़ना आवश्यक है। ऐसा करने से एक सशक्त और समतामूलक समाज का निर्माण संभव हो सकेगा।

मुख्य शब्द - महात्मा गांधी, महिला शिक्षा, लैंगिक समानता, समकालीन चुनौतियाँ

I. परिचय

महिला शिक्षा किसी भी देश का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए एक मुख्य स्तंभ माना जाता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण राष्ट्र में, जहाँ महिलाएँ जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा हैं, महिला शिक्षा का महत्त्व और भी अधिक हो जाता है। एक शिक्षित महिला न सिर्फ अपनी अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेत होती है, बल्कि वह अपने परिवार, समुदाय और देश के समग्र विकास में भी सक्रिय भागीदारी करती है। इसलिए, महिला शिक्षा को सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में विशेष रूप से SDG-4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) और SDG-5 (लैंगिक समानता) के केंद्र में रखा गया है।

भारत में ऐतिहासिक रूप से महिलाओं की शिक्षा की स्थिति ने कभी भी संतोषजनक रूप नहीं लिया है। स्वतंत्रता से पूर्व, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं के कारण महिलाओं को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध नहीं हो सके। पितृसत्तात्मक संस्कृति, बाल विवाह, पर्दा प्रणाली और लैंगिक भेदभाव जैसी सामाजिक कुरीतियों ने महिलाओं की शैक्षिक प्रगति में बड़ी बाधाएं उत्पन्न कीं। 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, जहाँ पुरुषों की साक्षरता दर 82.14 प्रतिशत थी, वहीं महिलाओं की साक्षरता दर केवल 65.46 प्रतिशत रही, जो स्पष्ट रूप से लैंगिक असमानता को उजागर करती है।[1] हालांकि, स्वतंत्रता के बाद सरकार ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाओं और विभिन्न नीतिगत प्रयासों के जरिए महिला शिक्षा को प्रोत्साहित किया है, फिर भी ग्रामीण-शहरी विभाजन, आर्थिक असमानता और डिजिटल खाई जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

इस संदर्भ में महात्मा गांधी का दृष्टिकोण अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने शिक्षा को केवल साक्षरता तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे व्यक्ति के पूरे विकास - शारीरिक, मानसिक और नैतिक उन्नति—का साधन माना। गांधीजी ने 'बेसिक एजुकेशन' या 'नई तालीम' का प्रस्ताव रखा, जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा को जीवन के लिए उपयोगी बनाना था। इस शिक्षा प्रणाली में उत्पादक कार्य, हस्तकला और व्यावहारिक ज्ञान को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया, ताकि व्यक्ति आत्मनिर्भर बन सके।[2]

महात्मा गांधी का मानना था कि महिला शिक्षा समाज में सुधार लाने का एक प्रभावी तरीका है। उन्होंने कहा था, ''यदि आप किसी पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो आप केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं; लेकि[3]न यदि आप किसी महिला को शिक्षित करते हैं, तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं।'' इस कथन से यह स्पष्ट है कि वे महिला शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन और नैतिक उन्नति का महत्वपूर्ण अंग

[1] भारत की जनगणना, 2011।

[2] गांधी, एम.के. (1938)। बुनियादी शिक्षा (नई तालीम)।

[33] गांधी, एम.के., महिलाओं की शिक्षा पर वक्तव्य (संकलित रचनाएँ)।

मानते थे। उन्होंने माताओं की शिक्षा पर खास ध्यान दिया, यह मानते हुए कि केवल एक शिक्षित माँ ही अपने बच्चों को सही संस्कार और ज्ञान प्रदान कर सकती है, जिससे एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकता है।

गाँधीजी ने महिलाओं की वर्तमान स्थिति को एक प्राकृतिक स्थिति नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक ढांचों का परिणाम बताया। उनका विचार था कि पारंपरिक सामाजिक नियम पुरुषों द्वारा बनाए गए हैं, जिनमें महिलाओं के अनुभवों और आवश्यकताओं को उचित रूप से ध्यान में नहीं रखा गया है।[4] इसी कारण महिलाओं में हीनता का एहसास बढ़ गया, जिसे शिक्षा के माध्यम से मिटाया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि पुरुष और महिला के बीच किसी भी तरह की श्रेष्ठता या हीनता का विचार नहीं होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, गांधीजी ने बाल विवाह और बाल विधवापन जैसी सामाजिक बुराइयों का मजबूती से विरोध किया। उनका मानना था कि "कोई भी परंपरा, भले ही वह कितनी ही प्राचीन क्यों न हो, यदि वह नैतिकता के खिलाफ है, तो उसे समाप्त कर देना चाहिए।" उन्होंने इन कुप्रथाओं को महिलाओं के विकास में सबसे बड़ी रुकावट माना और इनके उन्मूलन के लिए सामाजिक जागरूकता और शिक्षा को अत्यंत आवश्यक समझा। हालाँकि महात्मा गाँधी ने लैंगिक समानता का समर्थन किया, फिर भी उन्होंने पुरुषों और महिलाओं के बीच प्राकृतिक अंतर को मान्यता दी। उनका ये भी मानना था कि दोनों की भूमिकाएँ भिन्न हो सकती हैं, लेकिन इससे किसी की गरिमा या महत्वपूर्णता में कोई कमी नहीं आती। उनके दृष्टिकोण के अनुसार, समाज में श्रम का विभाजन असमानता का कारण नहीं बल्कि एक-दूसरे की सहायता करने वाला होना चाहिए, गाँधीजी के विचारों का एक मुख्य पहलू यह था कि उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। अहिंसक आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी ने उन्हें सामाजिक और राजनीतिक धरातल पर एक नई पहचान दिलाई। इससे महिलाओं के आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई और उनकी सामाजिक स्थिति में काफी सुधार आया।

II. महात्मा गांधी जी का विचार और महिला शिक्षा

गाँधीवादी शिक्षा के दृष्टिकोण में महिलाओं की शिक्षा का महत्व अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्त करने का साधन नहीं माना, बल्कि इसे व्यक्तित्व के समग्र विकास—शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक उन्नति—का एक माध्यम समझा। इस नजरिए से उनका 'नई तालीम' या 'बेसिक एजुकेशन' का सिद्धांत विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

क. नई तालीम का सिद्धांत

नई तालीम का मुख्य सिद्धांत "कार्य के माध्यम से शिक्षा" पर आधारित था। गाँधीजी के अनुसार, शिक्षा को जीवन और उत्पादन से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ सकें। इस दृष्टिकोण में हस्तकला, श्रम और व्यावहारिक कौशल को शिक्षा का केंद्रीय तत्व बनाया गया। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा मातृभाषा में दी जानी चाहिए और यह सभी वर्गों के लिए सुलभ होनी चाहिए।[5] महिलाओं के संदर्भ में यह मॉडल विशेष महत्व रखता था, क्योंकि यह उन्हें केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखता, बल्कि जीवन कौशल सीखकर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करता है।

ख. महिलाओं के लिए शिक्षा का महत्व

आत्मनिर्भरता

महात्मा गांधी ने शिक्षा को महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण माना, जिससे वे आर्थिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर हो सकें। एक शिक्षित महिला अपने अधिकारों के प्रति सजग रहती है और अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होती है। उनके दृष्टिकोण से, बिना शिक्षा के महिलाएँ अपने स्वाभाविक अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकतीं।[6]

नैतिक विकास

गाँधीवादी शिक्षा में नैतिकता और चरित्र निर्माण के लिए विशेष ध्यान दिया गया है। उनका मानना था कि शिक्षित महिलाएँ समाज में महत्वपूर्ण नैतिक मूल्यों—जैसे सत्य, अहिंसा और सहिष्णुता—का प्रचार करती हैं। एक शिक्षित माँ अपने बच्चों में भी इन गुणों का विकास करती है, जो अंततः एक स्वस्थ और समृद्ध समाज का निर्माण करता है।

ग. लैंगिक समानता के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण

गांधीजी का लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण अत्यंत सशक्त और प्रेरणादायक था। उन्होंने दृढ़ता से कहा कि पुरुष और महिलाएं समान

[4] पारेख, भिखू. (1989)। गांधी का राजनीतिक दर्शन।

[5] गांधी, एम.के. (1938), बुनियादी शिक्षा (नई तालीम)।

[6] गांधी, एम. के. महिला शिक्षा, भाषण और लेखन, पृ. 426–428.

सम्मान और अधिकारों के हकदार हैं, भले ही उनके कार्यक्षेत्र अलग-अलग हों। उनका कहना था, "पुरुष और महिला समान स्तर पर हैं, पर वे एक जैसे नहीं होते; वे एक-दूसरे के पूरक हैं।"[7] गांधीजी ने यह भी स्पष्ट किया कि महिलाओं को पुरुषों की आदतें अपनाने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, उन्हें अपनी विशेष सामर्थ्य के अनुसार समाज में योगदान देना चाहिए। उनके विचार में, किसी भी पेशे को न तो सस्ता समझा जाना चाहिए और न ही बहुत ऊँचा, बल्कि सभी कार्यों की अपनी महत्ता है।

घ. गांधी जी और महिला: एक सामाजिक मूल्यांकन

महात्मा गांधी ने महिलाओं की वर्तमान स्थिति को स्वाभाविक नहीं बल्कि ऐतिहासिक और सामाजिक ढांचों का परिणाम माना। उनका मानना था कि पारंपरिक सामाजिक नियम पुरुषों द्वारा स्थापित किए गए थे, जिनमें महिलाओं के अनुभवों को ठीक से स्थान नहीं मिला।[8] इसके परिणामस्वरूप महिलाओं में आत्महीनता का भाव उत्पन्न हो गया, जिसे वे शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाप्त करने का प्रयास कर रहे थे।

उन्होंने बाल विवाह और बाल विधवापन जैसी कुप्रथाओं का दृढ़ता से विरोध किया। उनके विचार में, ये प्रथाएँ महिलाओं की स्वतंत्रता और विकास में बाधक हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि कोई भी परंपरा, चाहे वह कितनी ही पुरानी हो, अगर यह नैतिकता के खिलाफ है, तो इसे खत्म करना चाहिए। हालाँकि गांधीजी ने पुरुष और महिला के बीच कुछ प्राकृतिक अंतर को स्वीकार किया, वे इस बात पर जोर देते थे कि यह अंतर असमानता का आधार नहीं बनना चाहिए। उनके अनुसार, समाज में कार्यों का विभाजन एक-दूसरे का समर्थन करने वाला होना चाहिए, न कि दमनकारी।

ङ. महिला सशक्तिकरण में गाँधी का योगदान

गाँधीजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए प्रेरित किया। उनकी अहिंसक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी ने उन्हें एक नई सामाजिक और राजनीतिक पहचान प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप उनका आत्मविश्वास और स्वतंत्रता में वृद्धि हुई। एक लेखक और विचारक के रूप में, गाँधीजी ने महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के विचारों को अपने पत्रिकाओं - Indian Opinion, Young India, और Harijan - के माध्यम से व्यापक रूप से फैलाया। उन्होंने महिलाओं को स्वदेशी आंदोलन में शामिल होने, आत्मनिर्भर बनने और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ खड़ा होने के लिए उत्साहित किया।

III. समकालीन चुनौतियाँ

भारत में महिला शिक्षा के क्षेत्र में पिछले कुछ दशकों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है, फिर भी अनेक संरचनात्मक और सामाजिक बाधाएँ आज भी विद्यमान हैं। ये चुनौतियाँ न केवल शिक्षाओं तक पहुँच को प्रभावित करती हैं, बल्कि इसकी गुणवत्ता और निरंतरता पर भी गंभीर असर डालती हैं।

क. सामाजिक असमानता

भारतीय समाज में लैंगिक असमानता एक गहरी समस्या बनी हुई है। पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण कई परिवारों में लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता नहीं मिलती। विशेषकर अनुसूचित जातियों (SC), अनुसूचित जनजातियों (ST) और अल्पसंख्यक समुदायों में यह समस्या और भी गंभीर बन जाती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5) के अनुसार, कई राज्यों में बालिकाओं की शिक्षा में भेदभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।[9] यह सामाजिक दृष्टिकोण लड़कियों के आत्म-सम्मान और शैक्षिक अवसरों को सीमित करता है।

ख. ग्रामीण-शहरी अंतर

ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की उपलब्धता और गुणवत्ता में बड़ा अंतर देखने को मिलता है। शहरी क्षेत्रों में जहाँ अच्छी स्कूलों, योग्य शिक्षकों और आधुनिक तकनीकी सुविधाओं का प्रावधान है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे की कमी, दूरियों के कारण विद्यालयों तक पहुँच और शिक्षकों की कमी जैसी अनेक समस्याएँ हैं। Unified District Information System for Education (UDISE+ 2021-22) की रिपोर्ट के अनुसार, हालांकि ग्रामीण

[7] गांधी, एम.के. (1937)। हरिजन, 27-7-1937.

[8] पारेख, भिखू. (1989)। गांधी का राजनीतिक दर्शन।

[9] International Institute for Population Sciences (IIPS). (2021*). National Family Health Survey (NFHS-5).*

क्षेत्रों में बालिकाओं का नामांकन बढ़ा है, परंतु उनकी उपस्थिति और निरंतरता अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।[10]

ग. डिजिटल विभाजन

कोविड-19 महामारी के बाद शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा डिजिटल प्लेटफार्मों पर निर्भर करने लगा है, जिससे डिजिटल असमानता एक गंभीर समस्या बन गई है। ग्रामीण इलाके और आर्थिक रूप से कमजोर तबकों की लड़कियाँ स्मार्टफोन, इंटरनेट और अन्य डिजिटल उपकरणों की कमी के कारण ऑनलाइन शिक्षा से वंचित होती हैं। NFHS-5 के आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं का केवल एक छोटा अनुपात ही इंटरनेट का नियमित उपयोग कर पाता है।[11] यह डिजिटल विभाजन महिला शिक्षा में एक नई प्रकार की असमानता को जन्म दे रहा है।

घ. बाल विवाह और ड्रॉपआउट दर

बाल विवाह आज भी महिलाओं की शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बना हुआ है। NFHS-5 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग 23% महिलाएँ अपने 18 वर्ष पूरा करने से पहले विवाह कर लेती हैं।[12] विवाह के बाद अधिकांश लड़कियाँ अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पातीं, जिसके कारण उनकी शैक्षिक यात्रा में बाधा आती है। इसके अलावा, माध्यमिक स्तर पर लड़कियों की ड्रॉपआउट दर भी काफी अधिक है। UDISE+ रिपोर्ट में इस बात का उल्लेख किया गया है कि उच्च कक्षाओं में पहुँचने तक बड़ी संख्या में लड़कियाँ विद्यालय छोड़ देती हैं।

ङ. आर्थिक बाधाएँ

गरीबी महिलाओं की शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण अवरोध बन गई है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में, सीमित संसाधनों के कारण अक्सर लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि लड़कियों की पढ़ाई को पीछे छोड़ दिया जाता है। 2011 की जनगणना और अन्य सरकारी रिपोर्टों से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक असमानता का सीधा नकारात्मक असर महिला साक्षरता और स्कूल में भागीदारी पर पड़ता है।[13] इसके अलाव, शिक्षा से जुड़ी अप्रत्यक्ष लागतें—जैसे कि परिवहन, किताबों और डिजिटल उपकरणों का खर्च—भी लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करती हैं।

IV. गाँधीवादी समाधान

समकालीन भारत में महिला शिक्षा से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण एक व्यवहारिक और नैतिक आधार प्रदान करता है। महात्मा गांधी के शिक्षा के सिद्धांत आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं, खासकर जब हम शिक्षा को केवल रोजगार तक सीमित न होकर सामाजिक परिवर्तन के एक उपकरण के रूप में देखते हैं।

क. नई तालीम का पुनर्प्रयोग

गाँधीजी की 'नई तालीम' का मुख्य लक्ष्य शिक्षा को जीवन और श्रम से जोड़ना था। यदि हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इस सिद्धांत को लागू करें, तो महिला शिक्षा को और अधिक व्यावहारिक और समावेशी बनाया जा सकता है। अगर हम शिक्षा को हस्तकला, स्थानीय उत्पादन और सामुदायिक गतिविधियों से जोड़ते हैं, तो लड़कियाँ केवल सैद्धांतिक ज्ञान में ही सीमित नहीं रहेंगी, बल्कि वे जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण कौशल भी हासिल कर सकेंगी।[14] यह दृष्टिकोण विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा को मजबूत करने में सहायक हो सकता है।

ख. कौशल आधारित शिक्षा

गाँधीजी ने आत्मनिर्भरता को शिक्षा का केंद्रीय लक्ष्य बताया। इस दृष्टिकोण से, कौशल आधारित शिक्षा महिलाओं के सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। जैसे कि सिलाई, बुनाई, हस्तशिल्प, डिजिटल कौशल और उद्यमिता के क्षेत्रों में प्रशिक्षण देकर महिलाओं को आर्थिक रूप से मजबूत किया जा सकता है। इसके परिणामस्वरूप, न केवल उनकी आय में वृद्धि होगी, बल्कि समाज में उनकी स्थिति भी मजबूत होगी।

[10] Ministry of Education, Government of India. (2022). *UDISE+ Report 2021-22*.

[11] NFHS-5 (2019–21), महिला डिजिटल पहुँच संबंधी आंकड़े.

[12] NFHS-5 (2019–21), बाल विवाह के आंकड़े.

[13] भारत की जनगणना। (2011)। साक्षरता और शिक्षा के आंकड़े।

[14] गांधी, एम.के. (1938)। बुनियादी शिक्षा (नई तालीम)।

ग. मूल्य आधारित शिक्षा

गाँधीवादी शिक्षा का एक केंद्रीय तत्व नैतिकता और चरित्र का विकास है। शिक्षा में सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता और समानता जैसे मूल्यों को शामिल करने से समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आ सकता है। मूल्य आधारित शिक्षा महिलाओं के भीतर आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और सामाजिक जिम्मेदारी का भाव पैदा करती है, जिससे वे सामाजिक कुरीतियों का सामना करने में सक्षम बनती हैं।[15]

घ. स्थानीय भाषा और आत्मनिर्भरता

गाँधीजी ने शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करने पर जोर दिया। उनके अनुसार, विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा लेने से विद्यार्थियों का बौद्धिक विकास बाधित हो सकता है और वे अपने सामाजिक परिवेश से दूरी बना सकते हैं। मातृभाषा में शिक्षा मिलने से बालिकाएँ ज्ञान को बेहतर तरीके से ग्रहण कर सकती हैं, जिससे शिक्षा की पहुँच और भी विस्तारित हो जाती है।[16] साथ ही, आत्मनिर्भरता गाँधीवादी दर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। महिला शिक्षा को इस तरह से विकसित किया जाना चाहिए कि महिलाएँ अपने निर्णय लेने में स्वतंत्रता महसूस करें और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। यह दृष्टिकोण न सिर्फ व्यक्तिगत सशक्तीकरण को प्रोत्साहित करता है, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

V. निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि महिला शिक्षा केवल एक शैक्षिक मुद्दा नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय, समानता और राष्ट्र के विकास से गहराई से जुड़ा हुआ एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। भारत में महिला शिक्षा में कुछ प्रगति के बावजूद, सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता, डिजिटल विभाजन और बाल विवाह जैसी समस्याएं अभी भी इसके लिए बड़े अवरोध बनी हुई हैं। ऐसे में महात्मा गांधी की सोच एक नैतिक और व्यावहारिक दिशा प्रदान करती है, जो इन चुनौतियों का सामना करने में आज भी महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को आत्मनिर्भरता, नैतिकता और सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण साधन समझा। उनका 'नई तालीम' का सिद्धांत आज की शिक्षा प्रणाली में लागू किया जा सकता है, जिससे महिला शिक्षा को अधिक उपयोगी और समावेशी बनाया जा सके। यह महत्वपूर्ण है कि केवल साक्षरता में वृद्धि करना ही काफी नहीं है। शिक्षा को इस तरह से विकसित करना चाहिए कि वह महिलाओं को आत्मनिर्भर, जागरूक और सशक्त बनाने में सहायक हो।

VI. सुझाव

- **क.** नीतिगत सुधार: सरकार को महिलाओं की शिक्षा के लिए विशेष बजट आवंटित करना चाहिए और इसके तहत योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करना आवश्यक है, खासकर ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में।
- **ख.** कौशल आधारित शिक्षा का विकास: महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए, विद्यालयी शिक्षा के साथ व्यावसायिक एवं कौशल प्रशिक्षण को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।
- **ग.** डिजिटल समावेशन: ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट, स्मार्ट उपकरण और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का व्यापक स्तर पर विस्तार करना आवश्यक है ताकि डिजिटल विभाजन को कम किया जा सके।
- **घ.** सामाजिक जागरूकता अभियान: बाल विवाह, लैंगिक भेदभाव और शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच को ख़त्म करने के लिए एक व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाना आवश्यक है।
- **ङ.** मूल्य आधारित शिक्षा: शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों और लिंग समानता को शामिल किया जाना आवश्यक है, ताकि समाज में सकारात्मक बदलाव संभव हो सके।
- **च.** स्थानीय भाषा और समावेशिता: शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करके अधिक सुलभ और प्रभावी बनाना आवश्यक है।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि गाँधीवादी सिद्धांत - जैसे आत्मनिर्भरता, समानता और नैतिकता - को समकालीन शिक्षा व्यवस्था में शामिल किया जाए, तो यह समाज के लिए बड़े बदलाव ला सकता है। महिला शिक्षा की मौजूदा चुनौतियों का प्रभावी समाधान उपलब्ध है। महिलाओं के सशक्तीकरण के माध्यम से ही हम एक समान, उन्नत और नैतिक समाज की स्थापना कर सकते हैं।

[15] गांधी, एम.के. (1937), हरिजन, 27-7-1937।

[16] गांधी, एम.के. (1909), *हिन्द स्वराज* ।

संदर्भ सूची

[1] महिला शिक्षा के संदर्भ में महात्मा गांधी के विचारों पर एक अध्ययन", JASRAE, vol. 21, no. 5, pp. 479–484, July 2024, doi: 10.29070/ayb1dt82.

[2] भारत की जनगणना। (2011)। साक्षरता और शिक्षा के आंकड़े।

[3] गांधी, एम.के. (1938)। बुनियादी शिक्षा (नई तालीम)।

[4] गांधी, एम.के., महिलाओं की शिक्षा पर वक्तव्य (संकलित रचनाएँ)।

[5] पारेख, भिखू . (1989)। गांधी का राजनीतिक दर्शन।

[6] गांधी, एम. के. महिला शिक्षा, भाषण और लेखन, पृ. 426–428.

[7] गांधी, एम.के. (1937)। हरिजन, 27-7-1937.

[8] International Institute for Population Sciences (IIPS). (2021). *National Family Health Survey (NFHS-5)*.

[9] Ministry of Education, Government of India. (2022). *UDISE+ Report 2021-22*.

[10] गांधी, एम.के. (1909)। *हिन्द स्वराज*.